प्रात/क्लास 21-2-68 ओमशान्ति. पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चों को अपन को यहां नहीं समझना चाहिए। तुमको अभी मालूम हुआ है हमारा जो राज्य था जिसको रामराज्य वा सूर्यवंशी राज्य कहते हैं उसमें कितना सुख शान्ति था। अभी हम फिर से देवता बन रहे हैं। आगे भी बने थे। हम ही सर्व गुण सम्पन्न, 16कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, देवीगुण वाले थे। अभी हम अपने राज्य में नहीं हैं। रावण राज्य में हैं। हम अपनी राजधानी में बहुत सुखी थे। तो अन्दर में बड़ी खुशी होनी चाहिए। निश्चय होना चाहिए। क्यों कि तुम फिर से अपनी राजधानी में जाते हो। रावण ने तुम्हारा राज्य छीन लिया है। तुम जानते हो हमारा अपना सूर्यवंशी राज्य था। हम राज्य करते थे अन्दर में यह नशा चढ़ना चाहिए। हम रामराज्य के थे, देवी गुण वाले थे। बहुत ही सुखी थे। फिर माया ने राज्य-भाग छीन लिया है। बाप आकर अपना और पराया राज्य का राज़ समझाते हैं। आधा कल्प तुम राज्य में थे फिर आधा कल्प रावण राज्य में रहे। बच्चों को यह निश्चय हो तो अन्दर में यह खुशी भी रहे। चलन भी सुधरे। हम अपने राज्य में बहुत2 सुखी थे। फिर रावण ने हमारा राज्य छीन लिया है। अभी पराई राज्य में हम दुःखी हैं। हिन्दु भारतवासी समझते हैं हम पराये राज्य में दुःखी में थे। अभी अपने राज्य में अपन को सुखी समझते हैं। परन्तु यह तो अल्प काल, काग बिष्टा समान सुख है। तो तुम समझते हो हम आधा कल्प सुख में थे। फिर माया से हराया है। तो तुम बच्चों को अन्दर में बहुत खुशी रहनी चाहिए। अगर ज्ञान है तो। नहीं तो जैसे ठिकर पत्थर बुधि हैं। अभी तुम बच्चों को पता है कल्प2 हम अपना राज्य लेते हैं। अभी भी जरूर अपना राज्य लेंगे। इसमें तकलीफ की तो कोई बात ही नहीं। राज्य लिया था फिर आधा कल्प राज्य किया, फिर रावण ने काया कला ही सारी चट कर दी। कोई अच्छे बच्चे हैं चलन बिगर जाती हैं तो कहते हैं ना उनकी तो काला काया ही चट हो गई। यह है बेहद की बातें। समझाना चाहिए माया ने हमारी काला काया ही चट कर दी थी। हम गिरते आये हैं। ऐसे जब समझे तब देवीगुण भी आवे। हम अपने राज्य में कितने सुखी थे। कितना प्यार, कितने देवी-गुण भी थे। यह भी जानते हो बेहद के बाप ने देवीगुण सिखलाई है, आसुरी गुण हद के बाप सिखलाते हैं। अपन को बड़ाख़ुशी में चढ़ाना चाहिए। टीचर नालेज देते हैं तो स्टुडन्ट को खुशी होती है ना। यह है बेहद की नालेज। हम देवी गुणों वाले थे। अभी हमारे में कोई आसुरी गुण तो नहीं हैं। अपन को देखना है। सब तो परिपूर्ण नहीं बनते हैं। नहीं तो फिर सज़ा खानी पड़े। सज़ाएं खावें ही क्यों इसलिए बाप जिससे वे यह राज्य मिलता है उन्हें याद करना है। देवीगुण भी जो हमारे में थे वह फिर धारण करनी है। यथा राजा रानी तथा प्रजा। सब में गुण थे ना। देवीगुणों को तो समझते हो। अगर समझते ही न होंगे तो फिर लायेंगे कहां से। गाते भी हैं सर्व गुण सम्पन्न ..... तो यथ राजा-रानी तथा प्रजा होंगे ना। अभी पुरुषार्थ से ऐसा बनना है। बनने भी कितनी मेहनत होती है। क्रिमनल आई हो जाती है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझो तो क्रिमनल आई उड़ जावेगी। युक्तियां तो बहुत ही बाप समझाते रहते हैं। क्वीगुण है तो देवता कहा जाता है। जिनमें दोष है तो उनको मनुष्य कहा जाता है। है तो दोनों ही मनुष्य। देवताओं को पूजते क्यों हैं उनमें देवीगुण है। तो मनुष्य परन्तु करतूत बन्दर की है। कितनी शैतानी मारा-मारी, झगड़ा आदि होता है। सतयुग में ऐसी बातें होती नहीं। यहां ही होता है। जरूर अपनी भूल होती है तब तो सहन करना पड़ता है। आत्माभिमानी नहीं तो सहन करना पड़ता है। तुम जितना आत्माभिमानी बनेंगे उतना ही देवीगुण धारण होंगे। अपनी जांच करनी हमारे में देवीगुण है। बाप सुखदाता है तो बच्चों को भी बाप को सुख देना चाहिए। अपनी दिल से पूछना हम किसको दुःख तो नहीं देते हैं। परन्तु कोई2 की ऐसी आदत होती है जो दुःख देमे बिगर नहीं रहते हैं। बिलकुल सुधरते ही नहीं। जैसे जेल वर्डस होते हैं ना। वह जेल में ही अपने को समझते हैं। बड़े2 ऐसे काम करेंगे जो जेल में जाना पड़े। समझते हैं वहां तो रोटी टुकड़ा सुखसे मिलेगा।

भटकना तो नहीं पड़ता है। समझो अकाल पड़ता है, कितने मनुष्य मर जाते हैं। जेल वालों को तो दो रोटी जरूर देनी ही पड़े। तो अपनको जेल में ही सुखी समझते हैं। बाप कहते हैं वहो तो जेल होती नहीं। पाप होते ही नहीं जो जेल में जाना पड़े। यहां जेल में सज़ा भोगते हैं। अभी तुम भी समझते हम सभी अपने राज्य में थे। तो बहुत ही शाहुकार थे। जो भी इस ब्राहमण कुल वाले होंगे वह ऐसे ही समझेंगे। हम अपनी राजधानी में कितने सुखी थे। वहां तो प्रजा भी सुखी होती है। अभी माया के राज्य में सभी दुःखी हैं। हम अपना फिर से राज्य स्थापन कर रहे हैं। एक ही हमारा राज्य था। जिसको दैवताई राज्य कहा जाता है। ज्ञान मिलता है तो आत्मा को खुशी होनी चाहिए ना। जीवात्मा तो जरूर कहना पड़े। हम जीवात्मा जब देवी-देवता धर्म के थे तो सारे विश्व पर हमारा राज्य था। यह नॉलेज है ही तुम्हारे लिए। भारतवासी थोड़े ही समझते हैं हमारा राज्य था। हम देवी-देवता सतोप्रधान थे। अभी ब्रह्मा तमोप्रधान बने हैं। तुम समझते हो हम ही देवी देवता थे। अभी फिर बनेंगे। भल विघ्न भी पड़ते हैं। यह भी कहा तक अखबारों में डालेंगे। तुम्हारी दिन प्रति दिन उन्नति होती जाती है। तुम्हारा नाम बाला हो जायेगा तो फिर समझेंगे यह तो बहुत अच्छी संस्था है। बहुत अच्छा कार्य करती है। रास्ता तो बहुत सहज बताती हैं। कहते हैं सतोप्रधान थे तो अपनी अपनी राजधानी में थे। अभी तमोप्रधान रावण राज्य में हो। और कोई अपने को रावण राज्य में समझते नहीं हैं। पत्थर बुधि हो ना। अभी तुम समझते हो हम कितने स्वच्छ बुधि देवतायें थे। राज्य करते थे। अभी तुच्छ बुधि बन पड़े हैं। पुनर्जन्म लेते2 सतोप्रधान से तमोप्रधान पत्थर बुधि से पत्थर बुधि बन पड़े हैं। अभी हम फिर से अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। उछलना चाहिए ना। उस पुरुषार्थ में लग जाना चाहिए। कल्प2 लगे हैं अभी भी लगेंगे। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। तुम समझ भी सकते हो भारतवासी तुम सतयुग में तुम राज्य में बड़े सुखी, धनवान थे। सोमनाथ आदि की मंदिर बनाई। अभी अपने को तो देखो। अभी तुम बच्चे समझते हो हम श्रीमत पर अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। यह भी तुम घड़ी2 भूल जाते हो। नहीं तो वह अन्दर में खुशी रहनी चाहिए। एक दो को यही याद दिलाना है, मनमनाभव। बाप को याद करो जिससे ही हम राजाई लेते हैं। अन्दर में कितनी खुशी रहनी चाहिए। हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। यह कोई नई बात नहीं है। यह ड्रामा बना हुआ है। कल्प2 बाप हमको श्रीमत देते हैं जिससे हम दैवीगुण धारण करते हैं। नहीं तो सज़ा खाकर भी कम पद पा लेंगे। यह बहुत भारी लाटरी है। अभी पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाया तो कल्प-कल्पान्तर ऊंच पद पाते रहेंगे। तुम समझते हो बाबा हमको राजाई लिए कितनी पुरुषार्थ कराते हैं। अभी तो बिलकुल ही तुच्छ बुधि बन पड़े हैं। बाप तो रोज2 समझाते रहते हैं। कितनी सहज समझने की बातें हैं। प्रदर्शनी में भी यही समझाते रहे। तुम भारतवासी इस राजधानी के थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 सीढ़ी उतरते तुम ऐसे हो। अभी फिर दैवीगुण धारण करो। कितना सहज समझाते हैं। सुप्रीम बाप, सुप्रीम टीचर, सुप्रीम गुरु है ना। तुम कितने ढेर स्टुडन्ट हो। दौड़ी पहनते पहनते रहते हो। बाबा लिस्ट भी मंगाते रहते हैं। कितने ब्राहमण बने हैं। कितने निर्विकारी पवित्र हैं। कोई ने पूछा था अगर कोई हमसे पूछे तो क्या बतायें। तो बाबा ने सब की लिस्ट मंगाई है। यह सभी भेज रहे हैं। ब्राहमणियां जो समझती हैं वह लिख देते हैं। ब्राहमणियों को भी बाबा समझते हैं कि किस प्रकार ही है। सर्विसएबुल का नाम जरूर नम्बरवन में रखेंगे। ब्राहमणी थर्ड नम्बर में भी होगा। यह तो गुर जाने गुड़ की गोथरा जाने। बच्चों को समझाया है भृकुटि के बीच आत्मा रहती है। बाप परमात्मा कहते हैं मैं भी यहां आकर बैठता हूं। अपना पार्ट बजाता हूं। मेरा पार्ट ही है पतितों को पावन बनाने का। ज्ञान सागर हूं ना। बच्चे पैदा होते हैं कोई तो बहुत अच्छे होते हैं कोई बहुत खराब भी निकल पड़ते हैं। बाप कहते हैं यहां तो ऐसे ही है। कोई तो बहुत तंग करने वाले निकल पड़ते हैं। फिर आश्चर्यवत कथन्ती, सुनन्ती फिर भागन्ती हो जाते हैं। माया तुम कितनी प्रबल हो। फिर भी बाप कहते हैं भागन्ती हो कहां जायेंगे। यह एक बाप ही है तारने वाला। बाकी इतने सारे लाखों गुरु लोग हैं वह जरूर डूबोने वाले ही ठहरे। कहां एक

कहां लाखों। एक बाप है सदगति। तो बाकी सभी दुर्गति पाता हो जाते। इस ज्ञान को तो बिलकुल ही जानते नहीं। जिसने कल्प पहले जाना है वही जानेंगे। इसमें अपनी चलन को बहुत सुधारना पड़ता है। सर्विस करनी पड़े। बहुतों को कल्याण करना है। बहुतों को जाकर रास्ता बताना है। बहुत मीठी2 ज़बान से समझाना है। तुम भारतवासी विश्व के मालिक थे फिर तुम इस प्रकार अपना राज्य ले सकते हो। यह तो तुम समझते हो बाप जो समझाते हैं ऐसा दूसरा कोई समझ न सकेंगे। दुनिया में कोई है नहीं। फिर भी चलते2 माया से हराये देते हैं। बाप खुद कहते हैं इन विकारों के पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। यह जगतजीत बने हैं जरूर इन्हों ने कर्म ऐसे किये हैं। बाप ने काम कर्मों की गति भी भी बताई है। रावण राज्य में कर्म विकर्म ही होते हैं, रामराज्य में कर्म अकर्म होते हैं। मूल बाप है काम पर जीते तो जगतजीत बनेंगे। बाप को याद करो। अब वापस जाना है। हम अपना राज्य लेकर ही छोड़ेंगे। यह तो 100% सर्टन है। परन्तु राज्य यहां नहीं करेंगे। वहां राज्य लेते हैं। राज्य करेंगे अमरलोक में। अभी मृत्युलोक और अमरलोक के बीच में हो। यह भी भूल जाते हो इसलिए बाप घड़ी घड़ी याद दिलाते हैं। अभी यह तो पक्का निश्चय है हम अपनी राजधानी में जायेंगे। यह पुरानी राजधानी खत्म जरूर होनी है। नई दुनिया में जाने लिए हमको दैवीगुण भी धारण करनी है। अपने को आत्मा समझना है। क्योंकि अभी ही हमको वापस जाना है। तो अपने को आत्मा भी उस समय ही समझना है। फिर कब वापस थोड़े ही जाना है। वहां तो 5 विकार ही नहीं होंगे। जो हम योगलगायेंगे। योग तो इस समय ही लगाना होता है पावन बनने लिए। वहां तो मनुष्य सुधरते हुये ही हैं। फिर धीरे2 कला कम होती जाती है। यह तो बहुत सहज है। दैवीगुण भी धारण करनी चाहिए। क्रोध भी किसको दुःख देती है ना। मुख्य है देहाभिमान। वहां तो देहाभिमान होता ही नहीं। आत्माभिमानी होने क्रिमनल आई नहीं होती है। सिविल आई बन जाती है। तुम जानते हो हम अपनी राजधानी में बड़े ही सुखी रहते हैं। कोई काम नहीं, क्रोध नहीं।.... इस पर तुम्हारा गीत भी बना हुआ है अभी हम सो देवता बन रहे हैं। वहां यह विकार आद होते नहीं। अपनी राज्य में हम बहुत सुखी थे। फिर रावण ने राज्य छीना है। अनेक बार हहार और जीत हुई है। सतयुग से कलियुग तक जो कुछ हुआ है सो फिर रिपीट करना है। बाप वा टीचर के पास जो नालेज है वह तुमको सुनाते रहते हैं। यह रूहानी टीचर बेहद वन्डर फुल है। ऊंच ते ऊंच भगवान ऊंच ते ऊंच टीचर भी हैं। ऊंच ते ऊंच देवता बनाते हैं। बाप ही आकर डीटी-डिनायस्टी स्थापन करते हैं। तुम खुद भी देख रहे हो बाप कैसे डीटीज़म स्थापन कर रहे हैं। तुम खुद ही देवता बन रहे हो। अभी तो सभी अपने को हिन्दू2 कह देते हैं। उन्हों को समझाया जाता है वास्तव में है आदी सनातन देवी देवता धर्म। और सभी का धर्म चलता रहता है। यह एक ही देवी देवता धर्म है जो प्रायः लोप हो जाता है। यह तो बहुत ही पवित्र धर्म है। इन जैसा पवित्र धर्म कोई होता नहीं। पवित्र न रहने कारण कोई भी अपने को देवता कहलाने लायक नहीं हैं। तुम समझाये सकते हो तुम आदी-सनातन-पवित्र देवी-देवता धर्म के थे। तब तो देवताओं को पूजते हो। क्राईस्ट को पूजने वाले क्रिश्चन ठहरे। तुम भी देवताओं को पूजते हो तो देवता ठहरे ना। फिर अपने को हिन्दू क्यों कहते हो। युक्ति-युक्त समझाना चाहिए। सिर्फ कहेंगे हिन्दूधर्म, धर्म नहीं है तो झगड़ा करेंगे। उनको क्या पता। बोलो हम आदी सनातन देवी देवता धर्म के थे तो मनुष्य कुछ समझे। आदी सनातन हिन्दूधर्म तो है नहीं। आदी सनातन अक्षर ठीक है। सिर्फ देवता के बदले हिन्दू कहलाते हैं क्योंकि वह पवित्र थे। यह हैं अपवित्र हैं इसलिए अपने को वो देवता कह न सके। कल्प2 ऐसे होता है। इनके राज्य में कितने शाहुकार थे। अभी तो कंगाल बन पड़े हैं। देवी-देवता पदमपति थे। बाप जो समझाते हैं वह अच्छी रीत धारण भी करना है। समझाना है, दिन प्रति दिन युक्तियां तो बहुत अच्छी मिलती मिलती रहती है। पूछा जाता है तुम सतयुग के रहने वाले हो या कलियुग के? कलियुग के हो तो जरूर

नर्कवासी हो। सतयुग में स्वर्गवासी होते हैं। ऐसे तुम समझावेंगे तो आपे ही लज्जायमान हो जावेंगे। जरूर प्रश्न पूछने वाला खुद ट्रान्सफर कर असुर से देवता बना सकते हैं। और तो कोई भी पूछ भी न सके। यह भक्ति मार्ग तो बिलकुल ही अलग है। भक्ति का फल कहां है? वह है ज्ञान। सतयुग त्रेता में भक्ति होती नहीं। ज्ञान से दिन आधा कल्प, भक्ति से रात आधा कल्प। वहां भक्ति हो नहीं सकती। मानने वाले मानेंगे नहीं। न मानने वाले कब मानेंगे नहीं। कई फिर न ज्ञान को न भक्ति को मानते हैं सिर्फ पैसा कमाना ही जानते हैं। गवर्मेन्ट भी खुद कितना झूठ पाप कितनी रिश्वत, एडल्टेशन करती है। जितने बड़े खरीदारी उतने बड़े ठगी। ठगी बिगर पैसे कहां से आवे। गवर्मेन्ट को इनकम टैक्स कहां से मिले। यह रचना सारी इसे रची हुई है चलती रहती है। कल्प2 ऐसे कांटों की बाज़ार चलती है। अभी तुम अ फ्सा राज्य स्थापन कर रहे हो। बाप के श्रीमत पर। आधा कल्प हम राज्य लेते हैं फिर गंवाते हैं। यहां तो ठिकर2 पर घर2 में घूम पड़े हैं। युक्ति से समझाना होता है। बाबा पाईन्ट तो सब देते रहते हैं। भारत में तुम्हारा राज्य था। दूसरा कोई राज्य नहीं जो क्रिश्चन ने लूटा। नहीं। यह रावण ने छीना है। अभी रावण राज्य है। रावण जीता है मरता ही नहीं। मनुष्यों की बुधि में नहीं आता है हम क्या करते हैं। रावण को मारा फिर बनाते क्यों हैं। बर्श2 बनाते ही रहते हैं। ऐसे और कोई मनुष्य है क्या जिसका बुत बनाते हो आवे। यह रावण कौन है किसको भी पता नहीं है। तुमको भी पता नहीं था। अभी तुम बच्चों की बुधि में है हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। यह समझना है पावन बनना है। खुद ही कहते हैं हे पतित-पावन आओ हमको पावन बनाओ तो जरूर पावन बन राज्य करेंगे ना। मुक्तिधाम बैठ थोड़े ही जावेंगे। पावन राज्य था। अभी पतित राज्य है। शर्म आना चाहिए ना। परन्तु भारत के राज्य में कितने शादमानी आदि होते रहते हैं। सभी तरफ सिर्फ इण्डिया में नहीं। महर्षि आदि सब कहां से आये। दूसरे देवतायें सो फिर असुर बन जाते हैं। इन में सन्यासियों का भी धर्म आ जाता है। सन्यासी हो क्या क्या न करते हैं। कहते हैं हम ने घर-बार छोड़ा है। परन्तु अभी तो महल में बैठे हैं। महर्षि को स्टीमलैन है। सिखलाते कुछ भी नहीं। घूमता फिरता रहता है। यह भी रावण राज्य का मर्तबा है ना। रावण बहुत पहलवान है ना। तो यह भी पहलवान है। यह सब समझने की बातें हैं। विचार सागर मथन कर धारण करनी है। अन्दर में समझना चाहिए अगर हम सर्विस नहीं करते हैं तो ऊंच पद नहीं पा सकेंगे। बाकी 7-8 वर्ष है। तुम बच्चे अखबार आदि पढ़ते नहीं हो। बाहर में कितना हंगामा होता रहता है। अखबार से मालूम पड़ता है। एक दो को डराते रहते हैं। वह कहते हैं हम अमेरिका को उड़ावेंगे। वह कहते हैं हम रशिया को उड़ावेंगे। हे भाई। एक दो को बम्ब देने लिए तैयार भी बैठे हैं। बाम्ब सब को चलाई करते रहते हैं। यह कोई खाने की चीज़ तो है नहीं। यह सब अभी तैयार होते रहते हैं। यह बम्स आदि भी 100 वर्ष के अन्दर ही निकली है। आगे यह थे नहीं। 100 वर्ष तो बहुत हैं। 100 वर्ष में तो सारी दुनिया नई बन सकती है। आज कल मकान 3-4 मास में बनाते हैं। कोई2 मकान को एक वर्ष भी लग जाते हैं। बहुत आदमी हों तो जल्दी भी बन सकते हैं। तुम तो अपनी राजधानी स्थापन करते हो। वहां तो ह्य सोना ही सोना है। जैसे पत्थर की ईंटे हैं वैसे सोने के। उनको तो मर्म गर्म भी नहीं करना पड़ता है। अभी मशीनरी से कितना काम चलता है। इमिटेशन पत्थर कितने निकलते हैं। कार2 बनाते रहते हैं। यह सब हुनर फिर वहां भी चलेगा ना। हुनर से ही सर्वस कहते हैं। यहां भी बत्तियां ऐसी होती हैं जो बाहर से कुछ कुछ दिखाई न पड़े रोशनी ही रोशनी ही होती है। तो यह हुनर सब वहां चलेगा। भल मनुष्य थोड़े होंगे परन्तु अक्लमन्द होंगे। यथा राजा रानी तथा प्रजा पारस बुधि होंगे। रावण राज्य में बड़ा युक्ति से उनको सम्भालना होता है। मनुष्य ऐसे हैं जो मारने में भी देरी नहीं करते। तुम राक्षस राज्य के बीच में हो। हंस हंस मोती चुगते हैं, बगुले गन्दा। तुम संगम युग पर हंस बन रहे हो ऐसा बनने के लिए। तुम बच्चों को बड़ा नशा रहना चाहिए बाप हमको स्वर्ग जाई प्राप्ति कराने की युक्ति बताते हैं। अच्छा राज्य पाने और गंवाने वाले बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद-प्यार गुडमॉर्निंग।

*-: : *%*****: : ओमशान्ति: : -*****: -*।